IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बिलासपुर जिला की वर्तमान ग्रामीण अधिवास आकारिकी : एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ. सुमित कुमार सोनी
गोड़पारा राजा राम मंदिर के सामने
बिलासपुर छत्तीसगढ

सारांश :-

मानव व्दारा निर्मित समस्त संशोधित भूदृश्य सांस्कृतिक भूदृश्य कहलाते है। मानव व्दारा अधिवास का निर्माण अपनी आवश्यकता की पूर्ति तथा कार्य को सम्पादित करने के लिए करता है। चाहें वह ग्रामीण क्षेत्र हो या नगरीय क्षेत्र। बिलासपुर में वर्तमान 64.19 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है ग्रामीण क्षेत्र की अपनी ही विशेषता है। ग्रामीण क्षेत्रो की अधिकांश जनसंख्या, इन क्षेत्रों में कृषक ही रहते है। वह कृषि के माध्यम से अपना आर्थिक विकास करता है। ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न जातियों का समूह भी रहता है। जो ग्रामीण क्षेत्रों के विकास पर योगदान प्रदान करता है। आज सरकार की विभिन्न योजनाओं के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों का स्वरूप परिवर्तन हो रहा है। जिसमें ग्रामीण अधिवास के स्वरूप में परिवर्तन हो गया है। पहले समय में मकान या गृह निर्माण के लिए प्राथमिक पदार्थ जैसे मिट्टी,पत्थर, घास का प्रयोग करते थे,लेकिन आज ग्रामीण क्षेत्रों में भी कंक्रीट के मकान या गृह निर्माण किया जा रहा है। ग्राम को एक क्षेत्रीय इकाई मानकर उसके सभी भौगोलिक पक्षों का क्रमबद्ध विश्लेषण किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्र का विकास का आधार आर्थिक है। ग्रामीण क्षेत्र कच्चे पदार्थो का उत्पादन करता है जिससे नगरीय क्षेत्र से उसके बदले में नगरीय क्षेत्र से आय प्राप्त होती है। जिससे उसका जीवन स्तर में सुधार होता है। किसी भी गृह निर्माण करते समय स्थल का चुनाव महत्वपूर्ण योगदान माना गया है। साथ ही प्राकृतिक आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक कारक प्रभावित करते है।इन कारको के व्दारा ग्रामीण स्वरूप में परिवर्तन तथा ग्रामीण अधिवास आकारिकी भौतिक, कार्यात्मक, सामाजिक आकारीकी पर प्रभाव डालते है

कीवर्ड:-

बिलासपुर के ग्रामीणीकरण

, ग्रामीण प्रतिरूप, ग्रामीण आकारिकी , छत्तीसगढ की ग्रामीण जनसंख्या,कारक, स्वरूप

प्रस्तावना:-

मानव की तीन आवश्यकताओ - रोटी , कपड़ा , मकान में सें एक है । मकान का तात्पर्य आश्रय से मनुष्य पहले जंगलो में रहा करते थे फीर वे गुफाओं में रहने लगे । मानव का बौद्धिक विकास के कारण वह अपने लिए घर बनाना शुरुआत किया ,जानवरों को पालतू बना कर कृषि कार्य सम्पादित करने लगा । धीरे - धीरे मानव समुदाय एकत्र हुआ और बस्ती का निर्माण करना प्रारंभ हुआ । इसका उपयोग विभिन्न प्रकार के सामाजिक, सांस्कृतिक एंव आर्थिक, राजनीतिक कार्यो मे होता है । धूप - गर्मी,सर्दी और वर्षा से बचने और जंगली हिंसक पशुओं ,चोरो आदि से सुरक्षा के लिए मनुष्य ने आश्रय की आवश्कता पड़ी । इस प्रकार मकान की आवश्यकता मानव को प्रत्येक देशकाल में रही हैं । इस प्रकार गृह निर्माण की आरम्भ हुई जो मिट्टी,पत्थर,ईट,लोहा ,कंक्रीट आदि निर्माण सामग्री का उपयोग होता है,जिनसे विभिन्न आकार के भवन का निर्माण हुआ है । मानव व्दारा निर्मित समस्त भूदृश्य सांस्कृतिक भूदृश्य कहलाते है । मानव निर्मित अधिवास जिसमें मानव निवास करता है ,और विभिन्न कार्यो जैसे कृषि पशुपालन, उद्योग, व्यापार, परिवहन, शिक्षा,प्रशासन आदि कार्य सम्पादित करता है । अधिवास अपने आकार प्रकार के अनुसार भिन्न प्रकार के होते है इसमें कुछ छोटे लघु पुरवा से लेकर ग्राम ,ग्रामीण बाजार ,कस्बा ,शहर महानगर आदि सभी सम्मिलित किया जाता है । ग्राम को एक क्षेत्रीय इकाई मानकर उसके सभी भौगोलिक पक्षो का क्रमिक रूप से विश्लेषण किया जाता है । आकारिकी में जनसंख्या, कार्यो एंव कार्यात्मक क्षेत्रों समस्याओ आदि का क्रमिक अध्ययन किया जाता है । आकारिकी अन्तर्गत ग्राम की भौतिक, सामाजिक एंव कार्यात्मक का अध्ययन करते है । बिलासपुर जिला में मुख्य रुप से खनिज संसाधन में चूना पत्थर , ,डोलोमाइट पाया जाता है । जो क्षेत्र की आकृति या स्वरूप को प्रभावित करते है।बिलासपुर जिले में 70 प्रतिशत जनसंख्या कृषि कार्य में संलिप्त है । यह जिला छत्तीसगढ के धान का कटोरा कहलाने वाले का एक ही भाग माना गया हैं ।

राज्य में 1 मार्च 2024 की स्थिति में छत्तीसगढ की कुल कार्यशील जनसंख्या का का प्रतिशत 48.72 प्रतिशत और बिलासपुर में कार्यशील जनसंख्या का प्रतिशत 42.34 है । छत्तीसगढ में जनसंख्या वृध्दि दर 22.61 प्रतिशत रही है लेकिन बिलासपुर में जनसंख्या वृध्दिदर 2011 में 33.29 प्रतिशत रही जो 2001 में 17.91 थी । बिलासपुर की जनसंख्या 2024 में 2095112 हो गया है इसमें 1064264 अनुमानित पुरुष जनसंख्या तथा,1030849 महिलाओ की संख्या मानी गई है तथा जनसंख्या वृध्दि दर (2024) 22.41 प्रतिशत है और जनसंख्या घनत्व 322 प्रति व्यक्ति वर्ग किलोमीटर हो गया है । छत्तीसगढ का क्षेत्रफल 135191 वर्ग किलोमीटर में बिलासपुर का क्षेत्रफल 3508 वर्ग किलोमीटर है जिसमें का 2.67 प्रतिशत क्षेत्र बिलासपुर घेरता है तथा 33 जिले मे बिलासपुर का जनसंख्या के आधार पर 2 (दुसरा) वां स्थान है। बिलासपुर जिले में , 4 विकासखण्ड ,11 तहसील, नगर निगम 1, नगरपालिका परिषद 02 ,नगर पंचायत 31 ,ग्राम पंचायत 483 तथा 708 राजस्वग्राम है। बिलासपुर में साक्षरता

का प्रतिशत 70.78 तथा लिंगानुपात 1000 पुरुषो में 970 महिला हैं। बिलासपुर में मातृ मृत्यु दर 1000 प्रति जीवत जन्मों में 4 हो गया है ,तथा शिशु मृत्यु दर 20 हो गया है। वही सतत् विकास लक्ष्य में वर्ष 2030 तक छत्तीसगढ में शिशु मृत्यु दर 15 करने है। बिलासपुर में 2011 से 2024में जनसंख्या वृध्दिदर प्रतिशत 22.41 है। जिला में जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ रही है,इसका कारण अनुकूल जलवायु ,शांति प्रिय राज्य, औद्योगिक प्रगति,आर्थिक विकास के नये आयाम और अवसर है। छत्तीसगढ शासन की विभिन्न योजनाए ने भी इस क्षेत्र के विकास ने योगदान दिया है। जिले मे जनसंख्या वृध्दि के साथ ,निर्माण कार्यो,परिवहन साधने विकास के कारण ग्रामीण जनसंख्या में परिवर्तन के परिणाम स्वरूप कही विकास हो रहा है तो दूसरी तरफ पर्यावरण समस्या , स्वच्छ पानी ,बिजली,स्वास्थ्य सेवा की समस्या बढ़ती जा रही है। छत्तीसगढ के मध्य भाग के उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में जिला बिलासपुर स्थित है। बिलासपुर संभाग 1956 में बना वर्तमान में इसके अंतर्गत आठ जिला आते है। जिला का 21°47' से 23°8' अंकाक्ष और 81°14' सें 83°15' देशांतरीय विस्तार है इस क्षेत्र का क्षेत्रफल 3508.48 वर्ग किलोमीटर है जिसमें प्रदेश की जनसंख्या 2011 के अनुसार 1625502 है। जिसमे 827527 पुरुष और महिलाओ की संख्या 797875 रही। बिलासपुर में जनसंख्या 582146 (35.81 प्रतिशत) नगरी रही तथा ग्रामीण जनसंख्या 1043365 (64.19 प्रतिशत) है। बिलासपुर के उत्तर मे गौरेला-पेण्ड्रा-मरवाही तथा उत्तर पूर्व में कोरबा ,पूर्व में जांजगीर- चांपा ,दक्षिण मे बलौदाबाजार और पश्चिम में मुंगेली जिला है। बिलासपुर की समुद्र तल से उचाई 264 मीटर है। प्रदेश के वनमण्डल में बिलासपुर वन वृत सबसे बड़ा है जिले में वनक्षेत्रफल 38534 हेक्टेयर वन आवरण है।आर्थिक विकास के लिए परिवहन एंव संचार महत्वपूर्ण कारक भी महत्वपूर्ण मानक है जो व्यक्ति को गतिशील बनाती है

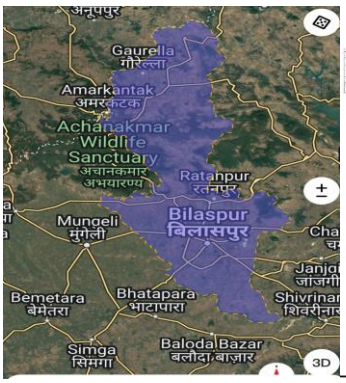

उद्देश :-

- बिलासपुर की ग्रामीण जनसंख्या वृध्दि का अध्ययन करना।
- ग्रामीण क्षेत्र की जनसंख्या घनत्व तथा वितरण का विश्लेषण करना।
- बिलासपुर ग्रामीण क्षेत्र की आयु संरचना तथा साक्षरता का अध्ययन करना।
- ग्रामीण क्षेत्र में जनसंख्या वृध्दि के कारणो को जानना तथा प्रक्रिया एंव स्तर का मापन करना।

- ग्रामीण क्षेत्र मे प्राकृतिक संसाधन अध्ययन करना।
- बिलासपुर के ग्रामीण प्रतिरूप का विवेचनात्मक अध्ययन ।
- बिलासपुर ग्रामीण क्षेत्र के वितरण प्रतिरूप का विश्लेषण करना।
- ग्रामीण विकास का एतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक स्वरूप का भौगोलिक अध्ययन करना।
- ग्रामीण आकारिका का विश्लेषण करना।
- ग्रामीण विशेषता, समस्या , सरकार की योजनाए का परिणाम का विवेचनात्मक अध्ययन करना।

आंकड़ो के स्त्रोत :-

बिलासपुर जिला का वर्तमान ग्रामीण अधिवास आकारिकी : एक भौगोलिक अध्ययन के लिए जनगणना के प्रकाशित आकड़े के साथ विभिन्न क्षेत्रो से एकत्र आंकड़ो के आधार पर है। छत्तीसगढ पंचायत एंव ग्रामीण विकास विभाग, भारत सरकार ग्रामीण विकास मंत्रालय, जिला सांख्यिकीय कार्यालय तथा भूमि उपयोग कार्यालय, ग्राम तथा नगर पंचायत , नगरपालिका , कार्यालय, समाचार पत्र और नेट से प्राप्त प्राथमिक एंव व्दितीयक आंकड़ो के आधार पर है

सारणीबद्ध आरेखन एंव विधि :-

उपयुक्त अध्ययन के लिए विभिन्न मानचित्रांकन तकनीक के साथ साथ रेखी आलेखो का उपयोग किया गया है। बिलासपुर जिला का वर्तमान ग्रामीण अधिवास आकारिकी : एक भौगोलिक अध्ययन के लिए छाया विधि, दण्ड आरेख , Google Earth map 3D ,अन्य विधियो का उपयोग किया गया है। क्षेत्र अध्ययन के लिए विश्लेषणात्मक तथा विवरणात्मक विधि का भी उपयोग किया गया है।

छत्तीसगढ एंव बिलासपुर क्षेत्र की ग्रामीण जनसंख्या विकास

छत्तीसगढ की कुल जनसंख्या 2011 के अनुसार 25545000 रही थी जिसमें 19608000 जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है।छत्तीसगढ में ग्रामीण जनसंख्या का 76.76 प्रतिशत है। छत्तीसगढ में एक दशक में कुल ग्रामीण जनसंख्या वृध्दिदर 17.79 रही और जनसंख्या वृध्दिदर 12.28 रही। छत्तीसगढ की वृध्दि की तुलना में ग्रामीण जनसंख्या वृध्दिदर में कमी पायी गई है। जहां वर्ष 1951 में कुल जनसंख्या का ग्रामीण भाग में 95 प्रतिशत जनसंख्या निवास कर थी ,जो 2011 में 76.76 प्रतिशत जनसंख्या निवास कर रही है। सन् 1951 में छत्तीसगढ की जनसंख्या 70.93 लाख थी जो बढ़कर 196.08 लाख तथा जन्म दर ग्रामीण क्षेत्र में 23.4 प्रतिशत रही। सन् 2011 में जनगणना के अनुसार बिलासपुर जिले की 74.48 प्रतिशत जनसंख्या गांव के ग्रामीण इलाको में निवास करती है।ग्रामीण क्षेत्रो में रहने वाली बिलासपुर जिले की कुल जनसंख्या 1983759 थी जिसमें पुरुष संख्या 1002520 तथा 981239 महिलाए है।

मद	1951	1961	1971	1981	1991	2001	2011
छ.ग: कुल जनसंख्या (लाख)	74.57	91.54	116.37	140.40	176.15	208.33	255.45
छ.ग: पिछले एक दशक में कुल जनसंख्या वृद्धि (%)	9.42	22.72	27.12	20.39	25.73	18.27	22.61
छ.ग: ग्रामीण जनसंख्या (%)	70.93	83.91	104.29	119.52	145.5	166.47	196.08
छ.ग: पिछले एक दशक में कुल ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि		18.30	24.29	14.60	21.74	14.41	17.79
छ.ग: पिछले एक दशक में कुल ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि (%)		12.98	20.38	15.23	25.98	20.97	29.61
छ.ग: कुल ग्रामीण जनसंख्या कुल जन संख्या के अनुपात में (%)	95.12	91.66	89.62	85.31	82.60	79.91	76.76

सूचकांक	2019-21			2020		
	कुल	ग्रामीण	शहरी	कुल	ग्रामीण	शहरी
अशोधित जन्म दर				22	23.4	17.3
कुल प्रजनन क्षमता दर	1.8	1.9	1.4			
शिशु मृत्यु दर	44.3	48.7	26.2	38	40	31
5 साल के नीचे मृत्यु दर	50.4	55.8	50.4			
अशोधित मृत्यु दर				7.9	8.4	6.3
Source:- NFHS 2019-21				Source:- SRS 2020		

बिलासपुर क्षेत्र का विभाजन कर दो नया जिला मुगेली तथा गौरेला- पेण्ड्रा- मरवाही बनाया गया है अब बिलासपुर की जनसंख्या वर्तमान में 1625502 हो गई है तथा गांव की संख्या 708 ग्राम है छत्तीसगढ में 11664 ग्राम पंचायत तथा 20255 गांव या ग्राम स्थापित है। ग्रामीण अर्थतंत्र के विकास के लिए स्वास्थ्य व शिक्षा ,पानी तथा सफाई, चिकित्सक सेवाओं सहित सहकारिता आवश्यक है ।उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण के युग मे इस प्रकार ग्रामीण विकास, विकास और गरीबी उन्मूलन के लिए एकीकृत अवधारणा किसी क्षेत्र के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। राज्य सरकार के व्दारा ग्रामीण विकास हेतु ग्रामीण क्षेत्रो में सामाजिक एंव आर्थिक विकास के लिए विभिन्न योजनाए तथा ग्रामीण विकास के अन्तर्गत महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना , प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण,आजीविका मिशन प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क विकास योजना ,मुख्यमंत्री आवास योजना, संसद और विधायक आर्दश ग्राम योजना स्वच्छ भारत मिशन आद विभिन्न योजनाओ के कारण ग्रामीण स्वरूप बदलते जा रहा है

अधिवास के विकास को प्रभावित करने वाले कारक :-

किसी भी अधिवास की अवस्थिति उनका आकार ,विन्यास पर अनेक प्राकृतिक तथा मानवीय कारक का प्रभाव दिखाई देता है किसी भी आवास या गृह निर्माण के लिए उसके स्थल का चुनाव महत्वपूर्ण आवश्यक कारक है स्थल पर अधिवास के विकास के पश्चात उसके चारो ओर स्थिति का योगदान होता है। किसी भी अधिवास की उत्पत्ति में स्थल का और उसके भावी विकास स्थिति पर निर्धारित होता है। अतः कारक निम्न है :-

प्राकृतिक कारक:-

A. स्थलाकृति :-

किसी प्रदेश में अधिवास की स्थल के चुनाव में स्थलाकृति की प्रमुख भूमिका होती है। स्थल में आवास निर्माण के लिए समतल चौरस मैदान का चयन किया जाता है साथ जल निकाय की पर्याप्त व्यवस्था हो और शुध्द पीने के लिए जल उपलब्ध होना आवश्यक है। समतल मैदान पर अधिवासों का निर्माण अधिक होता है साथ ही परिवाहन मार्गो के निर्माण मे और आवागमन सुविधा के साथ ही क्षेत्र के आर्थिक क्रिया के विकास को प्रोत्साहन मिलता है। समतल भूमि पर कृषि कार्य में सुगमता तथा उत्पादन में वृध्दि के कारणो से अधिक जनसंख्या के भरण पोषण की क्षमता होती है। मानव ऐसे स्थल का चुनाव नही करता है जहां जल भराव तथा बाढ़ का जल पहुंचने की सम्भावना होती है।

B. जलवायु :-

जलवायु किसी भी बड़े भौगोलिक क्षेत्र का औसत मौसम है। प्रदेश में पाये जाने वाले जलवायु का मानव क्रिया के साथ औद्योगिक संरचना को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभावित करता है छत्तीसगढ उष्णकटिबंधीय नम पर्णपाती मानसूनी जलवायु है बिलासपुर में औसत वार्षिक वर्षा 1200 से 1300 मि.मी. लगभग होती है। गर्मी का अधिक तापमान 40° सेल्सियस 45° रहता है। जनसंख्या के वितरण और अधिवास की अवस्थिति तथा विकास का सीधा सम्बन्ध होता है। प्रदेश में जलवायु मानव जीवन के विकास के लिए उपयुक्त होती है वहां जनसंख्या तथा बस्ती की संख्या एंव आकार में वृध्दि होती है। ऐसी जलवायु अच्छा माना गया है जो न तो अधिक उष्ण हो और न ही अत्यधिक शीतल हो।

C. जलपूर्ति :-

प्राचीन सभ्यता की उत्पत्ति या विकास सभी नदी घाटी में हुई (अरपा ,मनियारी)। छत्तीसगढ के विकास में जल संसाधन का उपयोग अत्यंत महत्वपूर्ण कारक है। नदी के जल का उपयोग सिर्फ घरेलू तथा कृषि के लिए ही नही परन्तु बिजली उत्पादन और औद्योगिक उत्पादन में प्रयोग अधिक महत्वपूर्ण है। इन नदी तटीय उपजाऊ जमीन पर कृषि एव सघन जनसंख्या का जमाव पाया जाता है

जल ही जीवन है जल के अभाव में मानव विकास का कल्याण या विकास सम्भव नहीं है।इसलिए मानव व्दारा स्थल का चुनाव करते समय जल की उपलब्धता का ध्यान रखना होता है। जल से सिर्फ मानव का आवश्यकता का ही पूर्ति नहीं करता बल्कि पशुपालन, सिचाई के लिए भी उपयुक्त है। इसलिए प्राचीन का मे मानव का बसावट नदी घाटी,तालाब एंव झील के किनारे में रहा है।

D. प्राकृतिक वनस्पति :-

ग्रामीण अधिवास की रचना में तथा स्वरूप पर प्राकृतिक वनस्पति का भी प्रभाव दिखाई देता है। वनस्पति का प्रत्यक्ष एंव अप्रत्यक्ष प्रभाव मानव निवास तथा सामाजिक-सांस्कृतिक पर पड़ता है । शाकाहारी का भोजन (अन्न एंव सब्जी) वनस्पति से प्राप्त है साथ ही गृह निर्माण सामग्री में लकड़ी,बांस, घाटे आदि पदार्थ उपयोग में लिया जाता है । जगली क्षेत्रो में रहने वाले लोग वन की लकड़ी का उपयोग जलाने तथा गृह निर्माण में करते है । वन की रक्षा एंव देव मानकर पूजा भी करते है ।

मानवीय कारक

A. आर्थिक कारण :-

भूतल के किसी भी स्थान पर जनसंख्या के बसावट पर आर्थिक कारक का महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किए गए है ।मानव की सर्वाधिक मूल भूत आवश्यकता आर्थिक क्रिया ,जीवन को चलाने के लिए आखेट,पशुपालन, उत्खनन, कृषि ,उद्योग, व्यापार आदि कोई न कोई साधन उपलब्ध होता है । जिससे उन क्षेत्रो में जनसंख्या का जमाव होते रहता है । ग्रामीण क्षेत्र में अलग-अलग भागो में निवास करते है। इस प्रकार विभिन्न व्यवसायों वाली जातियों की आपसी सहयोग या सहकारिता की भावना रहती है । जो ग्रामीण क्षेत्र की आत्मा है ।

B.सामाजिक एंव सांस्कृतिक कारक :-

अधिवास की अवस्थिति ,विस्तार, एंव स्वरूप का निर्धारण सामाजिक संगठनों प्रथाओं-परम्पराओ, रीति-रिवाज, मान्यताओ आदि पर आधारित होता है । ग्रामीण क्षेत्र में विभिन्न जाति पायी जाती है उनकी क्रियाशीलता से ग्राम उन्नतिशील होता है जिससे ग्रामीण आकारिकी प्रभावित होता है । ग्राम में लोहार और बढ़ई, बुनकर ,धोबी ,कुम्हार, दर्जी ,नाई, आदि जातियों के लोग ग्राम में अलग - अलग भागों में रहते है । ग्राम में सभाओं के लिए चौपाल बनाए जाते है । जहां गांव के लोग पंचायत, मनोरंजन आदि के लिए एकत्रित होते है । कहीं सार्वजनिक भूमि पर पंचायत भवन के चारो ओर निवास गृह बनाए जाते है । इस प्रकार इसका प्रभाव अधिवास के विन्यास पर प्रभाव डालते है । ग्रामीण अधिवास के विकास में **सांस्कृतिक तथ्य** से भी प्रभावित होता है । मानव के धार्मिक विश्वास और ,मान्यताओ, शिक्षा,विज्ञान तथा तकनीकी ज्ञान के विकास, आदि का प्रभाव अधिवास के विकास के संरचना तथा आकारिकी पर भी पड़ता है । ग्रामीण क्षेत्र में ग्राम देवता का एक स्थान होता है ।

बिलासपुर की ग्रामीण अधिवास के प्रकार :-

A. स्थल एंव स्थिति के अनुसार :-

किसी ग्राम के उदभव और विकास में स्थल एंव स्थिति का विशेष महत्व होता है जितना भूमि पर किसी अधिवास का वास्तविक विस्तार पाया जाता है तो उसे स्थल कहते है ।अधिवास के चारों ओर स्थित समस्त प्राकृतिक तथा मानवीय दशाओ को अधिवास की स्थिति के अन्तर्गत सामहित किया जाता है । स्थिति का अर्थ प्राकृतिक डालों - उच्चावच, सूचना ,अपवाह तंत्र, जलाशय,मिट्टी, जलवायु ,प्राकृतिक वनस्पति से लगाया गया है । अत: स्थिति के अनुसार :-

1. मैदानी ग्रामीण अधिवास :-

ऐसे अधिवास मैदानी भागो में पाया जाता है । बिलासपुर का अधिकांश क्षेत्री भाग मैदानी है मानव निवास के लिए समतल चौरस मैदानी भाग का चुनाव करता है । ऐसे अधिवास अधिक भागो में मिलता है यह सघन होते है ।

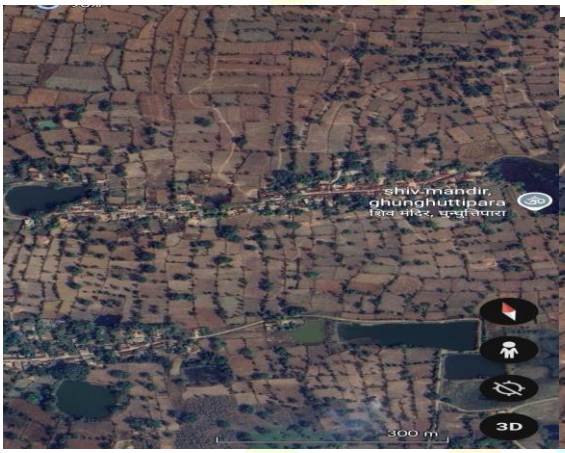

2.वनस्थलीय ग्रामीण अधिवास:-

ऐसे अधिवास वन क्षेत्रो में पाये जाते है यह अधिवास बिलासपुर के अचानकमार ,कोटा वन मण्डल क्षेत्रो में प्रकीर्ण या एकाकी रूप में पाया जाता है ।

3.नदी तटीय और झील तटीय ग्रामीण अधिवास :-

ऐसे अधिवास बिलासपुर के ग्रामीण क्षेत्रो से गुजरने नदी तटीय भागो और तालाबो के किनारे पाये जाते है । रतनपुर क्षेत्रो अधिक पाये जाते है । बिलासपुर के अधिकांश ग्रामीण क्षेत्र में तालाब पानी का मुख्य साधन है इस लिए इन क्षेत्रो में अधिवास का निर्माण तालाब के पास होता है

4.मार्ग संगम ग्रामीण अधिवास :-

ऐसे अधिवास दो मार्गो के संगम पर बसे होते है । ग्रामीण क्षेत्र से आने वाले मार्ग मुख्य सड़क के मिलने वाले स्थान पर बस्ती का निर्माण होने लगता है इसका मुख्य कारण परिवाहन सुविधाए हैं।

B.गृह की संख्या एंव घनत्व के आधार पर

छत्तीसगढ प्रदेश एक उष्णकटिबंधीय मानसूनी वाला प्रदेश है। बिलासपुर छत्तीसगढ के उत्तर-पश्चिम भाग में पड़ता है यह भाग खनिज संसाधन एंव वन संसाधन से भरपूर क्षेत्र है । जिसका प्रभाव मानव निवास पर दिखाई देता है । बिलासपुर प्रदेश में जनसंख्या 2011 के अनुसार 1625502 है । जिसमे 827527 पुरुष और महिलाओ की संख्या 797875 रही । बिलासपुर में जनसंख्या 582146 (35.81 प्रतिशत) नगरी और ग्रामीण जनसंख्या 1043365 (64.19 प्रतिशत) है । बिलासपुर की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रो में निवास करती है । इन क्षेत्रो में भौगोलिक, प्राकृतिक खनिज संसाधन, सामाजिक-सांस्कृतिक एंव आर्थिक दशाओं की विविधता के परिणाम स्वरूप इसके विभिन्न भाग में पाये जाने वाले ग्रामीण अधिवास देखने को मिलता है ।अत: बिलासपुर के ग्रामीण क्षेत्रो के गृहों का संख्या एंव घनत्व के आधार पर निम्न भाग में बाटते है :-

- **प्रकीर्ण या एकाकी अधिवास**
- **एकत्रित या सघन अधिवास**
- **अपखण्डित अधिवास**
- **संयुक्त अधिवास**

1.प्रकीर्ण या एकाकी अधिवास :-

यह ग्रामीण अधिवास का लघुता रुप है जिसमें गृह की संख्या कम होती है कहीं पर तो एकाकी गृह ही अधिवास के रुप में पाये जाते है। प्रकीर्ण या एकाकी अधिवास यत्र-तत्र बिखरे हुए दिखाई पड़ते है । इसमें घरों की संख्या चार पांच से अधिक नही होती है। प्रकीर्ण अधिवास के गृह का निर्माण सामग्री, मिट्टी,ईट,पत्थर, लकड़ी,घास -फूस आदि से निर्मित होती है किन्तु उनकी संख्या कम और दूरी अधिक होती है । यह अधिवास बिलासपुर के उत्तर और पश्चिम भाग में पाया जाता है ।

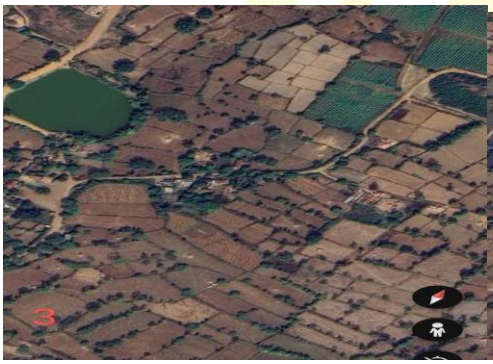

2.एकत्रित या सघन अधिवास :-

एकत्रित ग्रामीण अधिवास अपेक्षाकृत पास- पास स्थित अनेक गृहों के समूह होते है ।जिनका क्षेत्रीय आकार प्रकीर्ण अधिवास से बड़ा होता है । ऐसे अधिवास में अनेक कृषक परिवार रहते है जो परस्पर सहकारिता के आधार पर रहते है । एकत्रित अधिवास विस्तृत कृषि क्षेत्र की विशेषता है जिसके चारो ओर कृषि भूमि का विस्तार पाया जाता है । एकत्रित अधिवास को गांव के नाम से जाना जाता है । ग्रामों में अधिकांश कृषक परिवार रहते है ।

3.अपखण्डित अधिवास :-

ऐसे ग्रामीण अधिवास को अपखण्डित अधिवास कहा जाता ऐ । जिसमें अनेक गृह एक दूसरे से अलग-अलग और कुछ दूरियां छोड़कर बने होते है । यह अधिवास लघु पुरवा जैसे लगते है ,इसमें अपखण्डित अधिवास बसावट सघन नहीं होते है । ऐसे ग्राम की सीमा के अंदर गृहों का अधिक बिखराव पाया जाता है और ग्राम का कोई मूल केन्द्र या प्रमुख बसाव केन्द्र नहीं होता है बल्कि अनेक पुरवों के सम्मिलित होने से एक ग्राम का निर्माण होता है ।

4.संयुक्त अधिवास :-

ऐसे अधिवास को संयुक्त अधिवास की कहा जाता है । जिसमें एक मुख्य ग्राम होता है जो सघन प्रकार के बसा होता है ।इनके पास ही कुछ छोटे बड़े प्रवेश होते है जो मुख्य ग्राम का ही भाग होता है ।मुख्य ग्राम में विभिन्न जातियों के लोग अलग अलग खण्डो में रहते है

C .आकारिकी के आधार पर :-

ग्रामीण अधिवास की महत्वपूर्ण विशेषता उनकी आकारिकी के रुप में प्रकट होती है ।आकारीकी का तात्पर्य ग्राम की आन्तरिक रचना तथा उसकी बाह्य आकृति से है । ग्रामीण क्षेत्रो की भौतिक और स्थानिक संरचना साथ ही इन क्षेत्रों में मौजूद भवन,सड़को और बुनियादी ढांचे की व्यवस्था है । ग्रामीण आकारिकी ,जनसंख्या ,आर्थिक गतिविधियों और सांस्कृतिक दृश्यमान से जुड़ा है ग्रामीण आकारिकी को भौतिक, कार्यात्मक , सामाजिक एंव सांस्कृतिक कारक प्रभावित करते है । ग्रामीण आकारिकी को तीन भाग में बाटते है :-

1. **भौतिक आकारिकी**
2. **कार्यात्मक आकारिकी**
3. **जनांकिकी या सामाजिक आकारिकी**

1. भौतिक आकारिकी:-

भौतिक आकारिकी का अभिप्राय ग्रामों की ठोस रचना या निर्मित क्षेत्र से है जो गृह और गलियों के संगठन या विन्यास से उत्पन्न होते है । इस अधिवास को दूर से देखा जा सकता है । मार्ग या गलियां,गृह,पार्क ,बागीचा आदि भौतिक आकारिकी के संगठन तत्व ग्राम में घर सड़क या गलियो की ओर मुख्य व्दार खुलता है । गलियों की स्थिति एंव आकृति के अनुसार ही ग्रामों की आन्तरिक संरचना तथा बाह्य स्वरूप का निर्धारण होता है । ग्रामों की इस आकृति को ग्राम प्रतिरूप भी

कहते है । ग्राम प्रतिरूप के निर्धारण मे भौतिक,सांस्कृतिक स्थलाकृति के साथ सामाजिक-आर्थिक, एतिहासिक तथ्यो का महत्वपूर्ण योगदान होता है । ग्रामीण प्रतिरूप निम्न है :-

A. रेखीय प्रतिरूप :-

जब किसी ग्राम का विकास सड़क, नहर,नदी,आदि के सहारे पंक्तिबद्ध रूप से होता है ,उसकी आकृति रेखीय हो जाती है । ऐसे अधिवास प्रतिरूप की उत्पत्ति कीसी प्राकृतिक अवरोध जैसे नदियों के तटबंधो या कटकर के सहारे और सामाजिक, आर्थिक सुविधाओं (सड़क,नहर) के सहारे होता है । रेखीय बस्तियो के घर का मुख्य दरबाजा गलियो या सड़क की ओर खुलता है । यदि सड़क के दोनो ओर घर पंक्तिबद्ध रूप से है तो उनका व्दार आपने सामने सड़क की ओर खुलता है । इस प्रकार का गांव सघन तथा अर्द्ध सघन हो सकते है ।

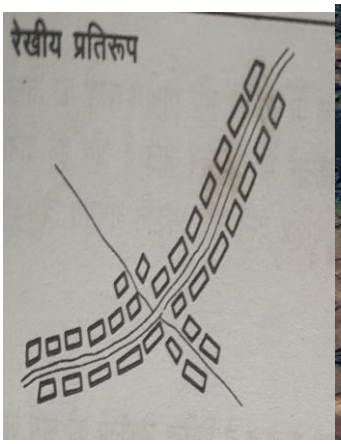

B.वर्गाकार या आयताकार प्रतिरूप:-

इस प्रकार का प्रतिरूप अधिकांश स्थानों में दिखाई देता है । इस प्रकार की आकृति समतल मैदानी भागो में देखा जाता है । इस क्षेत्र में लम्बाई और चौड़ाई लगभग बराबर होने पर ग्राम की आकृति आयताकार जैसी देखाई देती है ।इन दोनो ही दशाओं में गलियां प्राय: सीधी होती है ।

C.वृत्ताकार प्रतिरूप:-

जब ग्रामीण क्षेत्र में झील ,तालाब आदि के किनारे किनारे गृह बनाये जाते है तो वह आकृति ऊपर से देखने पर वृत्ताकार दिखाई पड़ता है। ऐसे ग्रामों का विकास मुख्यतः दो प्रकार से होता है :-

- जब किसी सार्वजनिक भूमि या भवन ,धार्मिक भवन आदि के चारों ओर बस्ती बन जाती है तो उसे **नाभिकीय ग्राम प्रतिरूप** कहते है।
- जब किसी जलाशय के चारों ओर गृह बनाए जाते है। तब बस्ती की आकृति **निहारिका** के समान हो जाता है। तो उसे **निहारिका ग्राम प्रतिरूप** कह सकते है।

D.अर्द्ध वृत्ताकार प्रतिरूप :-

किसी नदी विसर्फ,झील वृत्ताकार जलाशय आदि किनारे केवल एक ओर बसे हुए ग्राम की आकृति अर्द्ध वृत्ताकार होती है। जब किसी वृत्ताकार तालाब के किनारे ग्राम बसावट पूरे जलाशय को नही घेरता है और बसावट एक या दो दिशा में होता है।

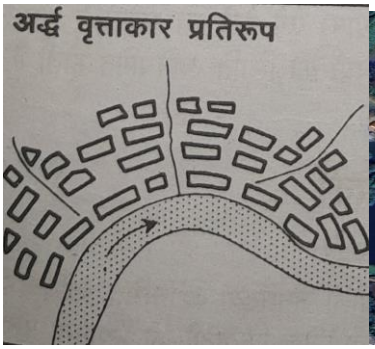

E. त्रिभुजाकार प्रतिरूप:-

जब किसी स्थलीय या बाधा कें कारण सड़क के एक ही ओर ग्रामीण बस्ती का विस्तार होता है। उस सड़क में मिलने वाली लम्बवत सड़क के किनारे भी मकान बन जाते है। इन दोनो बसाव क्षेत्रों के मध्य भूमि भी गृहों मकान से भर जाते है जिससे इसकी आकृति त्रिभुजाकार हो जाती है।

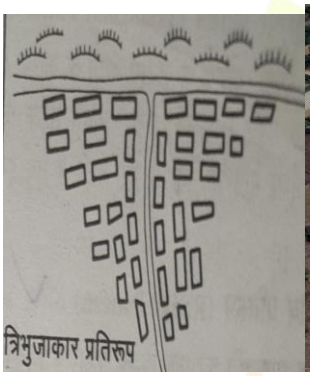

F. अरीयनुमा प्रतिरूप :-

यह प्रतिरूप मुख्य रुप से ग्रामीण क्षेत्रों मे पाया जाता है। जो यह गांव के केंद्र सें विभिन्न दिशाओं से मार्ग आते है ग्राम का मध्य भाग गाठ के रुप में सघन बसा हुआ होता है। उसके बाहर अरीय मार्गो के सहारे कु दूरी तक गृह बनाये जाते है।आरीय मार्गो के बीच से गृह बन जाते पर यह आकृति बन जाती है। इसे **तारा प्रतिरूप** भी कहते है इन गलियों पर मकान बनते बनते केंद्र से बाहर की ओर बढते जाते है। गांव के मध्य में बाजार या कुएँ की स्थिति के कारण इस प्रतिरूप का विकास होता है।

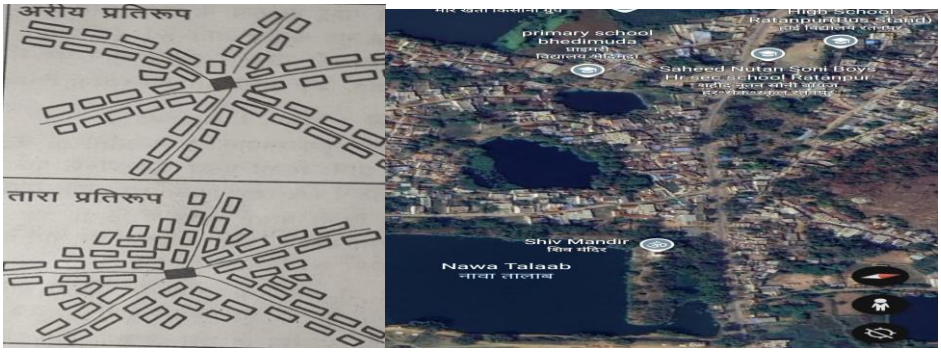

G. पंखाकार प्रतिरूप :-

गांव के एक सिरे पर किसी आकर्षण स्थान के होने पर मकान बस जाते है ये आकर्षण बिन्दु तालाब नदी का किनारा ,सड़क, बाग बगीचा ,पूजा स्थल के रूप में होता है । ग्रामीण क्षेत्र के मकान की पंत्तियां यहां पर मिलकर पंखानुमा प्रतिरूप बन जाते है ।

H. मालाकार प्रतिरूप :-

इस प्रकार के अधिवास नहरो किनारे काफी दूरी -दूरी में मकान बने होते है तब ऐसी प्रतिरूप माला के समान दिखाई देता है । यहां के मकान पंत्तिनुमा होता है ।

2. कार्यात्मक आकारिकी :-

कार्यात्मक आकारिकी का अभिप्राय वहां की जनसंख्या के विभिन्न आर्थिक क्रियाओं तथा भूमि उपयोग से सम्बंधित होती है। बिलासपुर के ग्रामीण अधिवास में प्राथमिक क्रिया की प्रधानता पायी जाती है।कार्यो के आधार पर ग्राम में मुख्यता कृषक,पशुचारक खनन ग्राम आदि कई प्रकार के हो सकते है। कार्यो के आधार पर वर्गीकृत इन अधिवासों में सम्पन्न होने वाले कार्यो में विविधता देखाई देता है। ग्राम की कार्यात्मक आकृति आकारिकी मुख्यत: ग्रामीण भूमि उपयोग से सम्बंधित होता है अत: इसे भूमि उपयोग आकारिकी भी कहते है। समानता बिलासपुर के कार्यात्मक आकारिकी को उसके कृषि भूमि उपयोग के अनुसार निम्न कार्यात्मक पेटियों में विभक्त कर सकते है

जो निम्न :-

1. **निर्मित क्षेत्र**
2. **अक्षत भूमि**
3. **आंतरिक कृषि भूमि**
4. **मध्यवर्ती कृषि भूमि**
5. **सीमांत कृषि भूमि**

1.निर्मित क्षेत्र यह ग्राम का बसा हुआ क्षेत्र होता है जिसके बाहर किसानो के खेत ,बाग बगीचा ,भूमि पायी जाती है। बसे हुए भाग में भू - स्वामी ,कृषक खेतिहर ,मजदूर तथा विभिन्न सेवा में शामिल जातियों के प्राय: अलग -अलग खण्ड होते है।

2.अक्षत भूमि बसे हुए भाग से संलग्न ऐसी भूमि पायी जाती है। जिसमें किसानों के खलिहान कम्पार्टमेंट गडडे ,सार्वजनिक भूमि आदि पाया जाता है।

3.आंतरिक कृषि भूमि ग्राम में संलग्न कृषि भूमि की यह आन्तरिक पेटी होती है।यह अधिक फसलो या दो फसलो वाली पेटी होती है। यह गहन भूमि उपयोग की पेटी है। जिसमें अधिकांश साग सब्जी,चारा फलफूल आदि की खेती की जाती है।

4. मध्यवर्ती कृषि भूमि आंतरिक कृषि पेटी के बाहर स्थित इस पेटी में प्राय: वर्ष में दो फसलें उगाही जाती है। इन क्षेत्रो में अन्न तथा व्यापारिक फसलों की खेती की जाती है।

5.सीमांत कृषि भूमि ग्राम से सर्वाधिक दूर तथा सीमावर्ती भाग में स्थित यह पेटी अपेक्षाकृत कम उत्पादन वाली होती है।इस भूमि पर प्राय: वर्ष में खाद्यान्न की एक फसले ही हो पाती है। इस पेटी में बाग भी पाये जाते है।

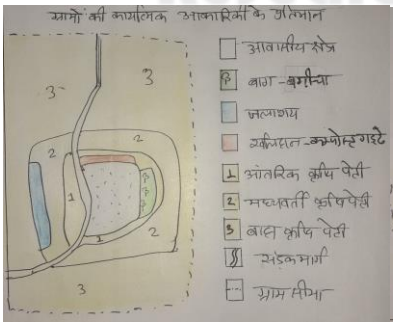

3. सामाजिक आकारिकी :-

ग्रामीण अधिवास में सामाजिक आकारिकी का तात्पर्य गांव में विभिन्न खण्डो में विभिन्न सामाजिक वर्गो का जमाव पाया जाता है। कुछ तो विशेष जाति या सामाजिक वर्ग के लोगो व्दारा बसे रहते है। लेकिन अधिवास ग्राम में बहुसंख्यक तथा सघन ग्राम में एक से अधिक सामाजिक वर्ग के लोग रहते है। इसमें भू-स्वामी ,कृषक ,मजदूर विभिन्न धार्मिक एंव जातीय वर्ग के परिवारों का जमाव गांव में विभिन्न खण्डो में पाया जाता है। गांव में समाज ,सामाजिक वर्ग जातियों, व्यावसायिक आदि के आधार पर विभक्त होते है जो परस्पर सहयोग और सहकारिता के आधार पर मिलजुलकर एक ही गांव में निवास करते है। गांव में भूमि का अधिक भाग भू-स्वामी ,कृषक के पास होता है। भूमिहीन वाले परिवारो के लोग मजदूरी करते है। खेती में लोगों के अलावा कुछ अन्य व्यवसायों वाली जातियों गांव में निवास करती है। गांव में कपड़ा धोने के लिए धोबी ,लोहे के औजार बनाने तथ्य मरम्मत के लिए लोहार ,बढ़ई ,कर्मकार आदि विभिन्न सामाजिक वर्गो के लोग रहते है। गांव में सामाजिक संरचना के विभिन्न प्रतिरूप पाये जाते है। गांव धर्म,वर्ण,जाति,वंश,गोत्र,व्यवसाय आदि प्रमुख होते है। भू- स्वामी तथा स्वर्ण जातियों के मकान ग्राम के मध्य एंव सेवा जातियों के मकान प्राय:बाह्य भाग में रहती है। खेतिहर जातीय गांव के किनारे खेतों पर रहना पंसद करती है और चमड़े का काम करने वाले लोग बाहरी भाग मे निवास करते है।

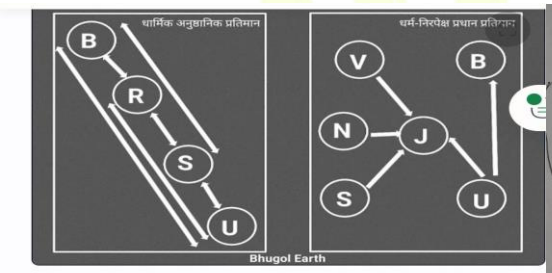

(B- ब्राम्हण, R- राजपूत, S- सेवा कार्य, U- अनु. जाति, V- वैश्य, N- नाई, J- जाट)

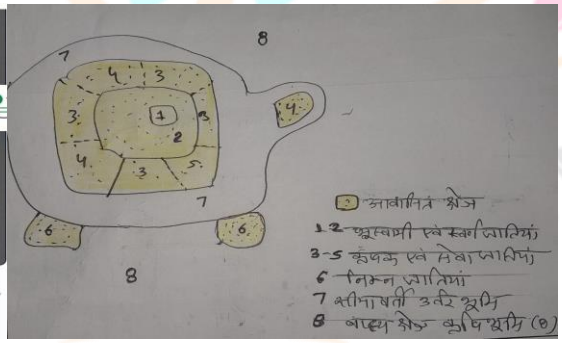

निष्कर्ष:-

निष्कर्ष में हम कह सकते है कि बिलासपुर में जनसंख्या वृध्दि के कारण जहाँ नगरीय स्वरूप बदल रहा है। वहीं ग्रामीण स्वरूप में भी प्रभाव देखा जा रहा है। प्रधानमंत्री आवास योजना ,प्रधानमंत्री सड़क योजना,शाकम्भरी योजना ,सिचाई योजना आदि विभिन्न योजनाओं के व्दारा ग्रामीण क्षेत्र का विकास किया जा रहा है। इससे ग्रामीण क्षेत्र का स्वरूप बदल रहा है। कृषको की आय वृध्दि से उनके जीवन स्तर में सुधार होने से मकान की संरचना से बदलाव हो गया है। बिलासपुर के ग्रामीण आकारिकी को प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक कारको का प्रभाव पड़ता है। बिलासपुर प्रदेश शांतिप्रिय जिला है यहां विभिन्न जाति वर्ग के लोग ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते है। जिसका प्रभाव ग्रामीण संरचना या प्रतिरूप में पड़ता है। ग्रामीण प्रतिरूप मकानों की पारस्परिक दूरी के आधार पर सुनिश्चित होता है। उस पर स्थलाकृति ,आर्थिक, ऐतिहासिक प्रवृत्तियों का प्रभाव दिखाई देता है। बिलासपुर के ग्रामीण आकारिकी को तीन भागो में बाटा गया है जो भौतिक, कार्यात्मक, सामाजिक आकारिकी। कार्यात्मक आकारिकी में ग्रामीण क्षेत्र के भूमि उपयोग से सम्बंधित रहती है जो प्राथमिक क्रिया से प्रभावित रहती

है कृषक का घनिष्ट संबंध या लगाव भूमि से रहता है । इसलिए वह अपने खेत में ही निवास करता है । उनके सहायता के लिए धोबी ,बढ़ई,नाई आदि जाति निवास करते है जो वहां की आकारिकी को प्रभावित करते है ।

संदर्भ ग्रंथ :-

- सिंह, राम : "ग्रामीण अधिवास ", International Journal of novel research and development .vol-9, Iss- March 2024 ,ISSN:2456-4184
- सिन्हा ,कलपना : नवादा जिला के ग्रामीण अधिवासों का उद्भव विकास एंव प्रकार एक भौगोलिक अध्ययन, International Journal of Research in social science ISSN:2249-2496, vol -8,Isss-11,nov.2018
- सुनील कुमार: मुजफ्फरपुर जिला: ग्रामीण अधिवास का एक भौगोलिक अध्ययन, International Journal of Research in social science ISSN:2249-2496, vol -9,Isss-1,nov.2019
- कविता : सीकर शहर में नगरीकरण की बदलती प्रवृतियो का भौगोलिक अध्ययन IJHSSI, ISSN 2319 - 7714 पृष्ठ-156 -162
- त्रिपाठी गणेश :बस्ती मण्डल में नगरीकरण का स्तर I शोध मंथन vol.XII No 3,July - Sep. 2021
- नेगी,प्रतिभा : कोटद्वार नगरीय क्षेत्र का भौगोलिक अध्ययन KIJAHS vol - 5 page no 24 -28 Jul - Sep 2018
- कुमार ,विजय : बिहार के नगरीकरण में शिक्षा का योगदान IJCRT vol - 8 Issue 10 October 2020
- बहादुर, राज : जौनपुर नगर की बढ़ती जनसंख्या : कारण प्रभाव एंव निवारण I IJCRT vol -9 Isse 6 June 2021
- बैरवा जयराम : भारतीय समाज में गंदी अथवा मलिन बस्तियो की समस्या IJERTIR April 2018, vol- 5 Issue 4
- सेठी,अर्चना : छत्तीसगढ में नगरीय जनसंख्या की प्रवृत्ति J.humanities and social science 2012 July - Sep. पृष्ठ 115 -118
- यादव,आर्थिक.एन : छत्तीसगढ के नगरीय जनसंख्या में वृध्दि की प्रकृति: एक भौगोलिक अध्ययन। शोध पत्र रिसर्च लिंक अक मार्च - मई 2006 पृष्ठ 66 -68
- यादव, आर्थिक एन. :" मध्य प्रदेश में नगरीय विकास का प्रतिरूप पीएचडी 2002
- Mahapatra S.N : Rapid Urban Expansion and it's Implications on Geomorphology A Remote sensing Hindawi publishing corporation Geography Journal vol 2014 page 10
- Dandekar,Hemalata.c : Rural planing General ,International encyclopedia of the social & behavioral science, 2001,pg 13425-13429
- सोनकर,निहारिका : विकासखंड शिवगढ़ जनपद प्रतापगढ़ (उत्तर प्रदेश) मे जनसंख्या की गत्यात्मक IJRRSS vol - 9 Issue 01January March 2021
- अग्रवाल, मधुलिका : नगरीकरण का पर्यावरण पर प्रभाव IJRRSS vol 7 Issue 02 April June 2019
- सिंह सुनीता : नगरीय जनसंख्या वृध्दि बदलती प्रवृतिया एंव समस्या योजना जुलाई 2003
- बघेल,अनुसूइया : मध्य प्रदेश के बड़े नगरों का कार्यिक वर्गीकरण भूविज्ञान, अक -5 संख्या 1
- बंसल सुरेश चन्द्र : नगरीय भूगोल मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ उत्तर प्रदेश

- मौर्य ,आर.एन. ,सिंह ,आर.एन : नगरीय भूगोल शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद
- खत्री,हरीश : नगरीय भूगोल ,कैलाश पुस्तक सदन भोपाल
- करण,एम.पी.: नगरीय भूगोल, किताब घर आचार्य नगर कानपुर
- बंसल,एस .सी. :अधिवास एंव जनसंख्या भूगोल
- तिवारी रामचन्द्र : अधिवास भूगोल, प्राधिकार पब्लिकेशन यूनिवर्सिटी इलाहाबाद
- मौर्य ,एस.डी : अधिवास भूगोल, शारदा पब्लिकेशन इलाहाबाद
- छत्तीसगढ आर्थिक सर्वेक्षण 2023 -24
- राज्य वित्त आयोग प्रतिवेदन
- बिलासपुर गजेटियर
- https://www.bhugolearth.com.in
- https://ddepa.org.in
- https://www.yourarticle library.com
- https://wikipedia.org
- https://www.nios.ac.in
- https://egyankosh.ac.in
- दृष्टि The vision
- IBC24 NEWSPAPER 29 November 2022 .
- ALLGK New